INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

REET

(मुख्य परीक्षा हेतु)

Level – 1

ॐ सरस्वती मया दृष्ट्वा, वीणा पुस्तक धारणीम।

हंस वाहिनी समायुक्ता मां विद्या दान करोतु में ॐ।।

भाग – 4

शैक्षणिक मनोविज्ञान + सूचना तकनीकी

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**राजस्थान 3rd ग्रेड (REET मुख्य परीक्षा लेवल – I हेतु)** को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर (RSMSSB)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"राजस्थान 3rd ग्रेड (REET मुख्य परीक्षा लेवल – I)" की** परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें/*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/r46kn5

Online Order करें - https://shorturl.at/gilw7

मूल्य : ₹	**संस्करण : नवीनतम**

क्र.सं.	अध्याय	पेज नं.
1.	शिक्षा मनोविज्ञान	1
2.	बाल विकास : अभिवृद्धि	9
3.	बाल विकास में वंशानुक्रम एवं वातावरण की भूमिका	26
4.	व्यक्तित्व की संकल्पना	32
5.	बुद्धि की संकल्पना बुद्धि सिद्धांत बुद्धि मापम बुद्धि परीक्षण	37
6.	अधिगम • अधिगम का अर्थ एवं संकल्पना व सिद्धांत • अधिगम स्थानान्तरण • अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक • अधिगम की प्रक्रियाएं	44
7.	विविध अधिगम कर्ताओं के प्रकार • पिछड़े, विमंदित, सृजनशील व प्रतिभाशाली इत्यादि बालक	56
8.	अधिगम में आने वाली कठिनाइयाँ	61
9.	अभिप्रेरणा एवं अधिगम में इसका प्रभाव • अभिप्रेरणा के सिद्धांत • अभिरुचि एवं स्मृति व विस्मरण	63
10.	समायोजन की संकल्पना एवं तरीके • मानसिक रोगों के प्रकार	68
11.	शिक्षण अधिगम • शिक्षण विधियों के प्रकार • शिक्षण सिद्धांत • सूक्ष्म शिक्षण • शिक्षण अधिगम सामग्री • राष्ट्रीय पाठ्यचर्या संरचना -2005	72
12.	मापन एवं मूल्यांकन • सतत एवं समग्र मूल्यांकन • उपलब्धि परीक्षण	85
13.	क्रियात्मक अनुसन्धान	95

14.	शिक्षा का अधिकार अधिनियम – 2009 • अध्यापकों की भूमिका एवं दायित्व	97
	अन्य महत्वपूर्ण तथ्य	102
	<u>कम्प्यूटर</u>	
1.	कम्प्यूटर का बुनियादी ज्ञान	107
2.	कम्प्यूटर मैंमोरी	109
3.	इनपुट और आउटपुट युक्तियाँ	116
4.	कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर	126
5.	वर्ड प्रोसेसिंग सॉफ्टवेयर	140
6.	माइक्रोसॉफ्ट पॉवर प्वाइंट	145
7.	स्प्रेड शीट सॉफ्टवेयर	148
8.	इंटरनेट	153

अध्याय – I

शिक्षा मनोविज्ञान

मनोविज्ञान का अर्थ – मनोविज्ञान एक ऐसा विज्ञान है, जो प्राणियों के व्यवहार एवं मानसिक तथा दैहिक प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है। व्यवहार में मानव व्यवहार के साथ-साथ पशु-पक्षियों के व्यवहार को भी सम्मिलित किया जाता है।

- "मनोविज्ञान" शब्द का शाब्दिक अर्थ है- मन का विज्ञान अर्थात् मनोविज्ञान अध्ययन की वह शाखा है जो मन का अध्ययन करती है। मनोविज्ञान शब्द अंग्रेजी भाषा के Psychology शब्द से बना है।
- 'साइकॉलोजी' शब्द की उत्पति यूनानी (लैटिन) भाषा के दो शब्द 'साइकी (Psyche) तथा लोगस (Logos) से मिलकर हुई है। 'साइकी' शब्द का अर्थ -आत्मा है जबकि लोगस शब्द का अर्थ -अध्ययन या ज्ञान से है ।
- इस प्रकार से हमने समझा की अंग्रेजी शब्द "साइकॉलोजी" का शाब्दिक अर्थ है- आत्मा का अध्ययन या आत्मा का ज्ञान।

मनोविज्ञान का विकास / उत्पत्ति – प्लेटो, अरस्तू जैसे दार्शनिकों ने मानव मस्तिष्क को समझने व जानने के लिए तथा शरीर से उसका सम्बन्ध समझाने की कोशिश की । हिप्पो क्रेटिस ने सबसे पहले इस विचार का प्रतिपादन किया कि मस्तिष्क चेतना का केंद्र है तथा समस्त मानसिक रोगों के कारणों का विवेचन किया । जैसे – कला, रक्त, कफ व पीला पित्त

- सुकरात ने विचार दिया की मनुष्य को स्वयं के बारे में सोचना चाहिए । प्लेटो ने (ई. पूर्व 5 वीं -4 वीं सदी) आत्मा ही परमात्मा का विचार दिया तथा अरस्तू ने 384 ई. पू. से 322 ई. में दर्शनशास्त्र में आत्मा का अध्ययन किया, यही आत्मा का अध्ययन आगे चलकर आधुनिक मनोविज्ञान बना, इसलिए अरस्तू को मनोविज्ञान का जनक माना जाता है तथा अरस्तू के काल से ही मनोविज्ञान जन्म माना जाता है ।

दोस्तों, अब हम मनोविज्ञान की कुछ विचारधाराओं को समझते हैं –

1. **मनोविज्ञान आत्मा का विज्ञान**- यह मनोविज्ञान की प्रथम विचारधारा है जिसका समय आरम्भ से 16वीं सदी तक माना जाता है। इस विचारधारा के समर्थक प्लेटो, अरस्तू, देकार्त, सुकरात आदि को माना जाता है। यूनानी दार्शनिकों ने मनोविज्ञान को आत्मा के विज्ञान के रूप में स्वीकार किया है। साइकॉलोजी शब्द का शाब्दिक अर्थ भी "आत्मा के अध्ययन" की ओर इंगित करता है।
2. **मनोविज्ञान मन / मस्तिष्क का विज्ञान** – यह मनोविज्ञान की दूसरी विचारधारा है जिसका समय 17 वीं से 18वीं सदी तक माना जाता है। इस विचारधारा के समर्थक जॉन लॉक, पेम्पोलॉजी, थॉमस रीड आदि थे। आत्मा के विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान की परिभाषा के अस्वीकृत हो जाने पर मध्ययुग (17वी शताब्दी) के दार्शनिकों ने मनोविज्ञान को मन के विज्ञान के रूप में परिभाषित किया। इनमें मध्ययुग के दार्शनिक पेम्पोलॉजी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।
3. **मनोविज्ञान चेतना का विज्ञान** – यह मनोविज्ञान की तीसरी विचारधारा है जिसका समय 19वीं शताब्दी माना जाता है। इस विचारधारा के समर्थक विलियम वुट, ई.बी.टिचनर, विलियम जेम्स, आदि को माना जाता है। मनोवैज्ञानिकों के द्वारा मन या मस्तिष्क के विज्ञान की जगह मनोविज्ञान को चेतना के विज्ञान के रूप में व्यक्त किया गया। टिचनर, विलियम जेम्स, विलियम वुट आदि विद्वानों ने मनोविज्ञान को चेतना के विज्ञान के रूप में स्वीकार करके कहा कि मनोविज्ञान चेतन क्रियाओं का अध्ययन करता है।
4. **मनोविज्ञान व्यवहार का विज्ञान** - यह मनोविज्ञान की नवीनतम विचारधारा है जिसका समय बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से आज तक माना जाता है।यह मनोविज्ञान की सबसे महत्वपूर्ण विचारधारा है। इस विचारधारा के समर्थक वाट्सन, वुडवर्थ, स्किनर आदि को माना जाता है। मनोविज्ञान को व्यवहार के विज्ञान के रूप में स्वीकार किया जाने लगा। वाट्सन, वुडवर्थ, स्किनर आदि मनोवैज्ञानिकों ने मनोविज्ञान को व्यवहार के एक निश्चित विज्ञान के रूप में स्वीकार किया। वर्तमान समय में मनोविज्ञान की इस विचारधारा को ही एक सर्वमान्य विचारधारा के रूप में स्वीकार किया जाता है।

मनोविज्ञान की परिभाषाएं

वुडवर्थ –"सर्वप्रथम मनोविज्ञान ने अपनी आत्मा को छोड़ा। फिर इसने अपने मन को त्यागा। फिर इसने चेतना खोई। अब वह व्यवहार को अपनाये हुए है।

वॉटसन –"मनोविज्ञान व्यवहार का शुद्ध विज्ञान/ सकारात्मक अध्ययन है।"

मैक्डूगल – "मनोविज्ञान व्यवहार एवं आचरण का विज्ञान है।"

स्किनर – "मनोविज्ञान व्यवहार एवं अनुभव का विज्ञान है।"

क्रो एवं क्रो - "मनोविज्ञान मानव व्यवहार एवं मानवीय संबंधों का अध्ययन है।"

वुडवर्थ - "मनोविज्ञान वातावरण के सम्पर्क में होने वाले व्यवहार का अध्ययन है।"

जेम्स ड्रेवर – "मनोविज्ञान शुद्ध विज्ञान है।"

बोरिंग एवं लेंगफील्ड - "मनोविज्ञान मानव प्रकृति का अध्ययन है।"

मन – "मनोविज्ञान वैज्ञानिक खोज से संबंधित है।"

गैरिस – "मनोविज्ञान मानव के प्रत्यक्ष मानव व्यवहार का अध्ययन है ।"

मैक्डूगल- मनोविज्ञान जीवित वस्तुओं के व्यवहार का विधायक विज्ञान है।"

मनोविज्ञान के सम्प्रदाय

1. संरचनावाद सम्प्रदाय -

- यह मनोविज्ञान का प्रथम सम्प्रदाय है जिसके प्रवर्तक विलियम वुण्ट, टिचनर आदि है।
- विलियम वुंट ने 1879 में लिपजिंग नामक स्थान पर जर्मनी में एक प्रयोगशाला बनाई। इनके विचार के अनुसार छोटे – छोटे प्रत्यय मिलकर एक संगठित प्रकार की संरचना का निर्माण कर लेते हैं।
- इस सम्प्रदाय के अनुसार मनुष्य की चेतना में मानसिक तत्वों का महत्वपूर्ण स्थान है। चेतना में संवेदना, प्रत्यक्ष ज्ञान, कल्पना(भाव) आदि सम्मिलित हैं। संरचनावाद में अंतर दर्शनात्मक विश्लेषण के द्वारा मन और चेतना के स्वरूप को जानने का प्रयास किया जाता है।

2. प्रकार्यवाद सम्प्रदाय -

- इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक विलियम जेम्स है। (अमेरिकी विद्वान)
- प्रकार्यवाद सम्प्रदाय के अनुसार मानसिक क्रियाएँ गतिशील और सप्रयोजनीय होती है।
- प्रकार्यवादियों ने संपूर्ण व्यक्ति के अध्ययन पर जोर दिया और मनोविज्ञान तथा जीव विज्ञान में घनिष्ठ संबंध स्थापित किया।
- इस संप्रदाय का विकास एवं विशेष प्रचलन में लाने का श्रेय अमेरिकी शिक्षाविद् जॉन डीवी को जाता है।

3. साहचर्यवाद सम्प्रदाय -

- इस सम्प्रदाय की स्थापना जॉन लॉक ने की थी। (इंग्लैण्ड निवासी)
- इसके अंतर्गत स्पंदन तथा स्मृति में संबंध ज्ञात करने के साहचर्य को स्वीकार किया गया है।
- कोई भी बालक जन्म के बाद जिस वातावरण के संपर्क में साहचर्य व्यवहार करता है उसी के अनुसार वह अपना व्यवहार भी करता है।
- जॉन लॉक ने ही कहा था – "जन्म के समय बालक का मस्तिष्क कोरे कागज के समान होता है जिस पर वह साहचर्य व्यवहार से अपने अनुभव लिखता है।"

4. व्यवहारवाद सम्प्रदाय -

- इस सम्प्रदाय के प्रतिपादक जे.बी. वॉटसन को माना जाता है। (अमेरिकी)
- व्यवहारवाद सम्प्रदाय मूर्त यथार्थ तथ्यों की व्याख्या करता है।
- इसके अनुसार मनोविज्ञान प्रकृति विज्ञान की एक विशुद्ध, प्रयोगात्मक शाखा है। जिसका उद्देश्य व्यवहार की व्याख्या, नियंत्रण और उसके विषय में भविष्यवाणी करना है।
- इसके अनुसार परिवेश में आवश्यक परिवर्तन करके किसी भी व्यक्ति को कुछ भी बनाया जा सकता है।
- समर्थक :- ईवान पेट्रोविच पॉवलव, सी. एल. हल, स्किनर, थार्न डाईक, बोरिंग, वुडवर्थ आदि।

5. गैस्टाल्ट वाद सम्प्रदाय -

- इस सम्प्रदाय के प्रतिपादक वर्दाइमर है। (जर्मनी विद्वान)
- समर्थक :- कोफ्का, कोहलर तथा कुर्त लेविन है।
- इस सम्प्रदाय का जन्म जर्मनी में लगभग 1912 ई. में हुआ।

गैस्टाल्ट शब्द - यह जर्मन भाषा का शब्द है जिसका अर्थ समग्र रूप / आकृति / संरचना/ पूर्णाकार होता है।

- इस सम्प्रदाय के अनुसार मनोविज्ञान को व्यवहार तथा अनुभव के प्रकार का अध्ययन करना चाहिए।
- वर्दिमर ने इस बात का खंडन किया कि प्राणी प्रयास व त्रुटी से सीखता है। इनका मानना था कि प्राणी का सीखना सूझ व अन्तः दृष्टि पर निर्भर करता है।
- पूर्व ज्ञान से सूझ पैदा होती है

↓

इससे नया अनुभव आता है

↓

अतः प्राणी सीखता है।

6. प्रेरक सम्प्रदाय

- इस सम्प्रदाय का प्रतिपादक विलियम मैक्डूगल है। यह सम्प्रदाय मशीनी या व्यवहार-विचार के बिल्कुल विरुद्ध है। इसे प्रेरक इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह प्रेरणा, कार्य करने या कार्य करने की इच्छा पर बल देता है।

7. मनोविश्लेषणात्मक सम्प्रदाय -

- इस सम्प्रदाय का प्रतिपादक सिगमंड फ्रायड को माना जाता है। (वियना – ऑस्ट्रिया निवासी)
- इस सम्प्रदाय में अचेतन एवं पूर्ण चेतन व्यवहार को सम्मिलित किया गया है।
- इस सम्प्रदाय में व्यवहार निर्धारण तथा व्यक्तित्व को निर्धारित करने वाली मूल प्रवृति कारक को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है।
- इस संप्रदाय में चेतन, अर्द्धचेतन, अचेतन, इदम, अहम्, पराअहम् जैसे विशेष शब्दों का प्रयोग किया गया है।
- इस संप्रदाय को और अधिक विकसित करने का श्रेय इनके शिष्य जुंग एवं पुत्री अन्नाफ्रायड को जाता है।

मनोविज्ञान की विशेषताएं / प्रकृति

(i) मनोविज्ञान एक अनुप्रयुक्त विज्ञान / व्यवहार का विज्ञान है।

(ii) मनोविज्ञान एक विधायक सकारात्मक विज्ञान है।

(iii) मनोविज्ञान में व्यक्ति के व्यवहार एवं पशु – पक्षियों का भी व्यवहार शामिल है।

(iv) यह भौतिक और सामाजिक दोनों प्रकार के वातावरण का अध्ययन करता है।

(v) मनोविज्ञान में सभी प्रकार के ज्ञानात्मक, संवेगात्मक तथा क्रियात्मक क्रियाओं का अध्ययन है।

❖ शिक्षा (Education)

शिक्षा अंग्रेजी भाषा के शब्द Education का हिन्दी रूपान्तरण है। जो लेटिन भाषा के Educatum शब्द से बना है जिसका अर्थ अंतः निहित शक्तियों का विकास करना शिक्षा संस्कृत के "शिक्ष" धातु से बना है जिसका अर्थ है 'सीखना'

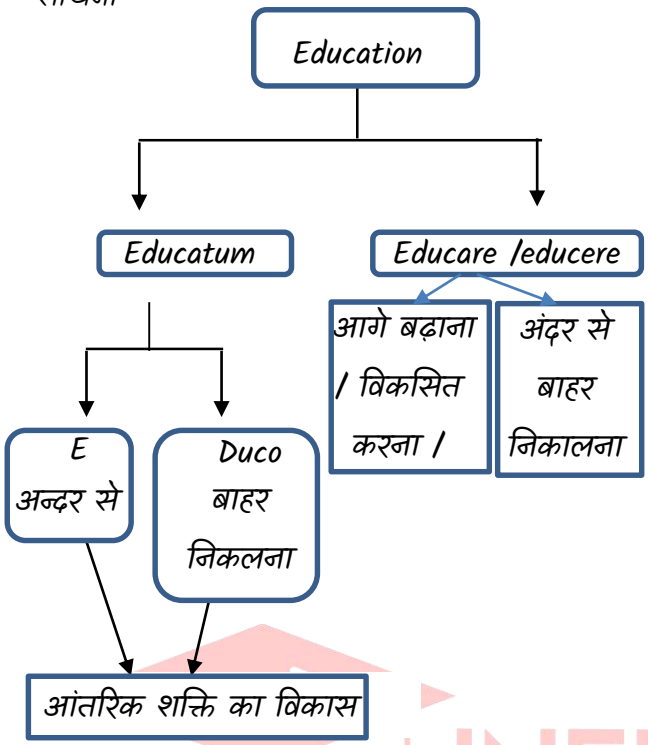

एडुकेटम का अर्थ - अंदर से बाहर निकालना।

- शिक्षा का संकीर्ण अर्थ :- वह शिक्षा जो निश्चित समय व स्थान से संबंधित होती है।
- शिक्षा का व्यापक अर्थ :- वह शिक्षा जो समय व स्थान से संबंधित नहीं होती है, अपितु आजीवन चलती रहती है।

शिक्षा का वास्तविक अर्थ – प्रकाशित करने वाली क्रिया।

3 R- लिखना, पढ़ना, गणना करना।
(Reading, Writing, Arthamatic)
4 H – मानसिक विकास - Head
भावात्मक विकास - Heart
क्रियात्मक विकास - Hand
शारीरिक विकास –Health

3 H का श्रेय / वर्तमान शिक्षा के विकास का श्रेय - पेस्टोलोजी।
महात्मा गांधी ने मातृभाषा शिक्षण का 3H सूत्र दिया

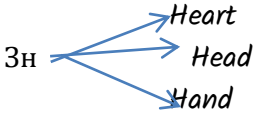

परिभाषाएं

- **स्वामी विवेकानंद :-** "मनुष्य में अंतर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति ही शिक्षा है।"
- **महात्मा गाँधी :-** "शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक या मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क तथा आत्मा की सर्वोत्तम विकास की अभिव्यक्ति है।"
- **जॉन डी. वी :-** "शिक्षा व्यक्ति की उन सभी योग्यताओं का विकास है जिनके द्वारा वह वातावरण के ऊपर नियंत्रण स्थापित करता है।"
- **ड्रनेविले के अनुसार :-** "शिक्षा के व्यापक अर्थ में वे सभी प्रभाव व अनुभव आ जाते हैं, जो बालक को जन्म से मृत्यु तक प्रभावित करते हैं।"
- **पेस्टोलॉजी -** "शिक्षा व्यक्ति की जन्मजात शक्तियों का स्वाभाविक, विरोधहीन तथा प्रगतिशील विकास है।"
- **अरस्तू –** शिक्षा का कार्य स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण करना है।"
- **प्लेटो –** शिक्षा व्यक्ति में शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक परिवर्तन लाती है।"
- **जॉनलॉक-** जिस प्रकार फसल के लिए कृषि होती है उसी प्रकार से बालक के लिए शिक्षा होती है।
- **क्रो एण्ड क्रो के अनुसार** "शिक्षा व्यक्तिकरण व समाजीकरण की प्रक्रिया है, जो व्यक्ति की उन्नति व समाज उपयोगिता को बढ़ावा देती है।
- **कॉलसेनिक के अनुसार-** "शिक्षा बालक में शारीरिक व मानसिक विकास करती है।"
- **रविचन्द्र टैगोर के अनुसार -**"शिक्षा वह ज्ञान है जो केवल सूचनाएं ही नहीं देता है अपितु मनुष्य के जीवन और उसके संपूर्ण वातावरण के प्रति तादम्य (समायोजन) स्थापित करता है।"

शिक्षा के तीन आयाम- शिक्षक, छात्र, पाठ्यक्रम
जॉन डी. वी. के अनुसार - त्रिध्रुवीय

1. शिक्षक 2. छात्र 3. पाठ्यक्रम

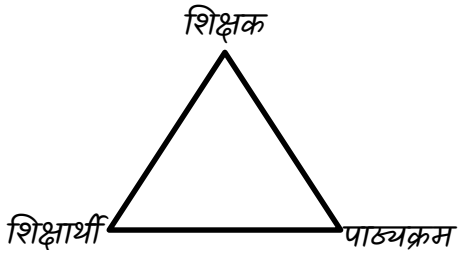

जॉन एडम्स के अनुसार :-
द्वि ध्रुवीय - शिक्षक _____ छात्र

शिक्षा की विशेषताएं :-

- शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है।
- शिक्षा सामाजिक व सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया है।
- शिक्षा औपचारिक व अनौपचारिक दोनों रूप में हो सकती है।
- शिक्षा आदर्शात्मक / मूल्यात्मक है।

शिक्षा के प्रकार :-

1. औपचारिक - स्कूल,
2. अनौपचारिक - परिवार,
3. निरौपचारिक - पत्राचार।

(i) औपचारिक शिक्षा – जिसका समय व स्थान निश्चित हो। जैसे – स्कूल में शिक्षा
(ii) अनौपचारिक शिक्षा – जिसका स्थान व समय निश्चित न हो, जीवन पर्यन्त चलती है, जैसे – परिवार, समाज में।
(iii) निरौपचारिक शिक्षा – दूरस्थ शिक्षा, पत्राचार व खुले विद्यालय या कॉलेज द्वारा शिक्षा।

शिक्षा मनोविज्ञान :-

मनोविज्ञान के सिद्धांतों को शिक्षा के क्षेत्र में लागू करना ही शिक्षा मनोविज्ञान है।

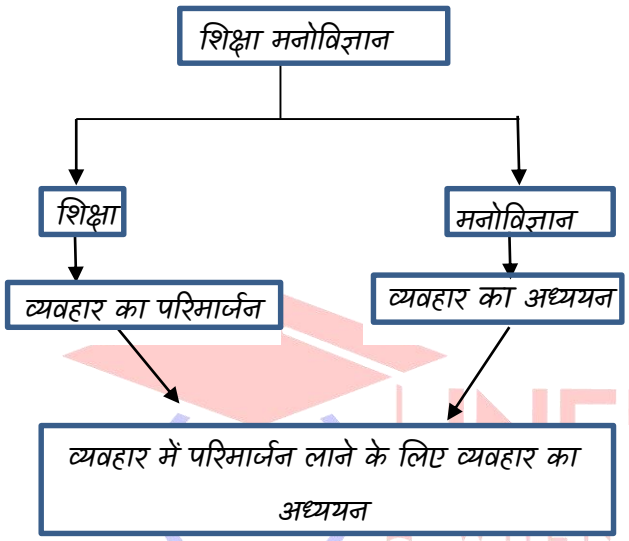

शिक्षा मनोवज्ञान की उत्पत्ति –

- शिक्षा मनोविज्ञान के जनक – थार्नडाईक हैं इनपर प्रकृतिवादी रूसो का प्रभाव था।
- रूसों का शिक्षा पर लिखा गया प्रसिद्ध ग्रंथ- 'एमील (Emile) है।
- रूसो की बुक emil में लिखा था – बालक एक पुस्तक के समान होता है अतः शिक्षक को उसे मध्योपांत तक पढ़ना चाहिए।
- मनोविज्ञान के सिद्धांतों को शिक्षा के क्षेत्र में लागू करना ही शिक्षा मनोविज्ञान है।
- कॉलसेनिक के अनुसार शिक्षा मनोविज्ञान का जन्म प्लेटो से हुआ।
- स्किनर के अनुसार शिक्षा मनोविज्ञान का जन्म अरस्तू से हुआ।
- शिक्षा मनोविज्ञान को लोकप्रिय/प्रचलित बनाने का कार्य रूसों व फ्रोबेल ने किया।
- शिक्षा मनोविज्ञान को मनोवैज्ञानिक स्वरूप प्रदान करने वाले विद्वान पेस्टॉलोजी एवं हरबर्ट हैं।
- आधुनिक शिक्षा मनोविज्ञान का जन्म अमेरिका में 1900 ई० में हुआ।
- शिक्षा मनोविज्ञान को एक अलग विषय के रूप में मान्यता 1920 ई. में अमेरिका में मिली।
- American Psychological Association America द्वारा 1940 में शिक्षा मनोविज्ञान पर सबसे पहले शोध कार्य प्रारंभ किया गया।
- अमेरिकी शिक्षा शास्त्री जॉन डी. वी. के प्रयोसों से शिक्षण-प्रशिक्षण शुरू हुए।
- भारत में शिक्षण –प्रशिक्षण का कार्य – 1920 में शुरू हुआ।

शिक्षा मनोविज्ञान की परिभाषाएं –

- **क्रो एवं क्रो** "शिक्षा मनोविज्ञान बालक के जन्म से लेकर वृद्धावस्था तक सीखने के अनुभवों की व्याख्या एवं वर्णन करती हैं।"
- **कॉलसनिक** "शिक्षा मनोविज्ञान के अंतर्गत मनोविज्ञान के अनुसंधानों व सिद्धांतों का शिक्षा के क्षेत्र में अध्ययन किया जाता है।"
- **प्रो.एच.आर. भाटिया-** "शैक्षणिक पर्यावरण में किसी विद्यार्थी या व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन ही शिक्षा मनोविज्ञान है।"
- **स्किनर** "शिक्षा मनोविज्ञान के अंतर्गत शिक्षा से संबंधित संपूर्ण व्यवहार और व्यक्तित्व शामिल हैं।"
- **स्किनर** "शिक्षा मनोविज्ञान व्यक्तित्व के सभी पहलुओं से संबंधित है।"
- **स्किनर-** "शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापकों की तैयारी की आधारशिला है।"
- **स्टीफन –** "शिक्षा मनोविज्ञान बालक के क्रमबद्ध शैक्षिक विकास का अध्ययन है

मनोविज्ञान के घटक (चर) 5 हैं -

1. शिक्षक
2. विद्यार्थी (सबसे महत्वपूर्ण घटक)
3. परिस्थितियां
4. पाठ्यचर्या
5. शिक्षण विधियां।इन पांचों घटकों में विद्यार्थी (शिक्षार्थी) सबसे महत्वपूर्ण हैं।

शिक्षा मनोविज्ञान का क्षेत्र-

1. बालक की अभिवृद्धि व विकास का अध्ययन।
2. बालक की विशेष योग्यताओं का अध्ययन।
3. बालक की रूचियों, अभिरूचियों, अभिवृत्तियों, क्षमताओं, योग्यताओं, व्यक्तिगत विभिन्नताओं का अध्ययन
4. बालक के वंशानुक्रम व वातावरण का अध्ययन।
5. बालक के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक संवेगात्मक विकास का अध्ययन।
6. विभिन्न शिक्षण विधियों का अध्ययन।
7. प्रतिभाशाली बालक, विशिष्ट बालक, विकलांग बालक, अपराधी बालक एवं मानसिक रोगों से ग्रस्त बालकों का अध्ययन।
8. शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन।

- बाल विकास का वैज्ञानिक अध्ययन करने वाला व्यक्ति – पेस्टोलॉजी थे जिन्होंने प्रथम बार बालक के विकास को लेकर विचार दिया।
- 1774 ई. में अपने ही $3\frac{1}{2}$ वर्षीय पुत्र का अध्ययन किया और उसके विकास को समझते हुए baby biography नामक लेख लिखा अतः बाल मनोविज्ञान के जनक – पेस्टोलॉजी
- पेस्टो लॉजी के लेख को जर्मनी के बाल रोग विशेषज्ञ टाइडमेन ने पढ़ा व समझा तथा उसके आधार पर 'बाल चिकित्सा अनोविज्ञान' की विचारधारा का विकास किया।(बाल चिकित्सा मनोविज्ञान के जनक- टाइडमेन)
- 19 वीं सदी में श्रीमती हरलॉक ने विचार दिया कि एक बालक का विकास गर्भ काल से ही प्रारम्भ हो जाता है।

  note : – जब हम बालक के विकास का अध्ययन जन्म के बाद की अवस्थाओं को लेकर करते हैं तो यह बाल मनोविज्ञान कहलाता है और अगर जन्म से पूर्व गर्भावस्था से अध्ययन किया जाता है तो बाल विकास कहलाता है।
- बाल अध्ययन आंदोलन की शुरुआत - अमेरिका में 1893, स्टेनले हॉल ने की थी।
- स्टेनले हॉल ने बाल अध्ययन समिति और बालक कल्याण संगठन की स्थापना की तथा पेड़ोलोजिकल सेमीनरी नामक पत्रिका में बाल विकास का अध्ययन किया है।
- प्रथम बाल सुधार गृह की स्थापना - अमेरिका (न्यूयार्क) में 1847 मे हुई थी
- प्रथम बाल निदेशन केंद्र - विलियम हीली - शिकागो 1909
- भारत में बाल अध्ययन की शुरुआत – 1930

बाल विकास की परिभाषा :-

- **हरलॉक** – विकास केवल अभिवृद्धि तक ही सीमित नहीं है यह तो परिपक्वता की दिशा में होने वाले परिवर्तनों का प्रगतिशील क्रम है, जिसके द्वारा एक बालक में नई – नई विशेषताएं एवं योग्यताएं प्रकट होती हैं।
- **एंड क्रो** – गर्भावस्था के प्रारंभ से लेकर किशोरावस्था तक बालक के व्यवहार में होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन ही बाल विकास है।
- **मुनरो के अनुसार** - विकास परिवर्तन श्रृंखला की वह अवस्था है, जिसमें बच्चा भ्रूण अवस्था से प्रौढ़ अवस्था तक गुजरता है।
- **हरलॉक** – विकास व्यक्ति में नवीन विशेषताओं व योग्यता को प्रस्तुत करता है।
- **बर्क के अनुसार** – जन्म पूर्व की अवस्था से लेकर परिपक्वता की अवस्था तक का अध्ययन बालविकास होता है।
- **क्रो एण्ड क्रो के अनुसार** – बाल मनोविज्ञान वह वैज्ञानिक अध्ययन है जिसमें गर्भाकाल से लेकर किशोरावस्था के मध्य तक का अध्ययन किया जाता है।
- **आइजनेक** – बाल मनोविज्ञान का सम्बन्ध बालक में मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं के विकास से है जिसमें गर्भ कालीन अवस्था से लेकर परिपक्वता की अवस्था तक की प्रक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है।
- **जेम्स ड्रेवर के अनुसार** – बाल मनोविज्ञान मनोविज्ञान की वह शाखा है जिसमें जन्म से लेकर परिपक्व अवस्था तक विकासशील मानव का अध्ययन किया जाता है।

❖ वृद्धि / अभिवृद्धि (Growth)

सामान्य रूप से व्यवहारिक शब्दावलियो में जिस के लिए वृद्धि का प्रयोग किया जाता है। वह प्रक्रिया मनोवैज्ञानिक परिक्षेपो में अभिवृद्धि की प्रक्रिया कहलाती है।

- अभिवृद्धि की प्रक्रिया के अन्तर्गत किसी भी बालक का शारीरिक पक्ष सम्मिलत होता है अर्थात् किसी बालक के शरीर की ऊँचाई, आकार तथा भार आदि प्रक्रमों परिवर्तन देखा जाता है, अभिवृद्धि कहलाती है।
- फेंक महोदय के अनुसार "अभिवृद्धि cellular Multiplication अर्थात कोशकीय वृद्धि कहा है।

अभिवृद्धि तथा विकास में अन्तर

- अभिवृद्धि की प्रक्रिया में शारीरिक पक्ष में लम्बाई, चौड़ाई भार इत्यादि सम्मिलित होते हैं।
- विकास - बालक विकास की प्रक्रिया में विकास के अन्तर्गत किसी बालक का सम्पूर्ण विकास सम्मिलित होता है।
- इस विकास की प्रक्रिया के अन्तर्गत शारीरिक, मानसिक संवेगात्मक सामाजिक आदि सभी विकास सम्मिलित होते हैं।
- इसके अतिरिक्त अप्रत्यक्ष रूप से विकास की प्रक्रिया में नैतिक, चारित्रिक तथा भावात्मक विकास इत्यादि में सम्मिलित होते हैं।
- अभिवृद्धि की प्रक्रिया में सम्मिलित शारीरिक विकास तथा विकास की प्रक्रिया में सम्मिलित शारीरिक विकास में अन्तर पाया जाता है।
- अभिवृद्धि का शारीरिक विकास केवल वृद्धि (बढना) तथा क्षय (घटना) को प्रदर्शित करता है। जबकि विकास का शारीरिक विकास वृद्धि तथा क्षय को प्रदर्शित करता है।

Growth (अभिवृद्धि)	Development (विकास)
• अभिवृद्धि किसी बालक के केवल शारीरिक पक्षों से संबंधित है।	• विकास की प्रक्रिया में शारीरिक, मानसिक, सामाजिक सभी प्रकार के विकास होते है।
• अभिवृद्धि की जन्म से लेकर एक निश्चित समय तक चलती है यह निरंतर प्रक्रिया नहीं है।	• इसमें जन्म से लेकर जीवन पर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है।
• अभिवृद्धि की प्रक्रिया एकांकी होती है।	• विकास की प्रकिया का द्रष्टिकोण सर्वांगीण होता है।

• अभिवृद्धि- परिमाणात्मक रूप को परिवर्तित करती है ।	• विकास की प्रक्रिया बालक के गुणात्मक रूप को व्यक्त करती है
• अभिवृद्धि की प्रक्रिया को प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है ।	• विकास की प्रक्रिया को प्रत्यक्ष रूप से देखा नहीं जा सकता है और न ही इसे मापा- तौला जा सकता है ।
• अभिवृद्धि की प्रक्रिया को मापा – तौला जा सकता है ।	• विकास का घटक अर्जित होता है ।
• अभिवृद्धि का घटक जन्म जात होता है।	• विकास की प्रक्रिया अभिवृद्धि के अंतर्गत सम्मिलित नहीं होती है
• अभिवृद्धि की प्रक्रिया विकास के अंतर्गत सम्मिलित होती है ।	

❖ **बाल विकास की विभिन्न अवस्थाएं –**

1. शैशवावस्था (जन्म – 6 वर्ष)
Infancy → In fant + Infarty

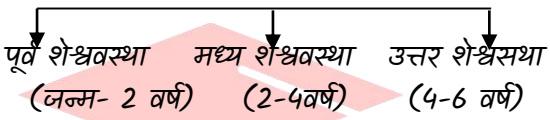

2. बाल्यावस्था (6-12वर्ष)

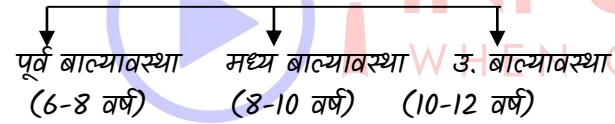

3. किशोरावस्था (12-18 वर्ष)

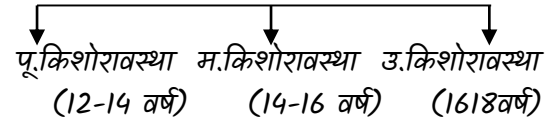

महत्वपूर्ण कथन :-

न्यूमैन के अनुसार :- "5 वर्ष की अवस्था बालक के शरीर व मस्तिष्क के लिए बड़ी ग्रहणशील होती है।"

फ्रायड के अनुसार :- "बालक को जो कुछ भी बनना होता है, वह प्रथम 4 या 5 वर्षों में बन जाता है।"

रूसो के अनुसार :- "बालक के हाथ, पैर, नेत्र प्रारम्भिक शिक्षक होते हैं।"

थॉर्नडाईक के अनुसार :- "3 से 6 वर्ष के बच्चे अर्द्धस्वप्न अवस्था में होते हैं।"

क्रो एण्ड क्रो के अनुसार :- "20 वीं शताब्दी को बालकों की शताब्दी कहा गया है।"

गुडएनफ के अनुसार :- "बालक का जितना भी मानसिक विकास होता है, उसका आधा प्रथम तीन वर्षों में हो जाता है"।

मुख्यतः बाल विकास की 4 अवस्थाएं होती हैं-

1. ***गर्भावस्था –(280 दिन / 9 माह)***

सबसे पहले गर्भाधारण के समय बीज अंडाणु में प्रवेश करता है। बीज का योंक नामक पदार्थ से पोषण की प्राप्ति होती है। लगभग 2 सप्ताह तक इस अवस्था का विकास होता है। इस अवस्था को बीजावस्था कहते हैं। 16 वें दिन अंडा फूटकर भ्रूण के रूप में बीज से बाहर निकाल जाता है। इस समय में 32 कोशिकाएं होती हैं। इसे भ्रूणवस्था कहते हैं । यह काल 2 माह तक रहता है, जिसमें 3 परतों का निर्माण होता है -
(i) बाह्य स्तर (Ectoderm) – त्वचा, बालों का निर्माण होता है ।
(ii) मध्य स्तर (Mesoderm) - मांसपेशियों का निर्माण
note :- मध्य परत के द्वारा ही आन्तरिक अंग जैसे हृदय, मस्तिष्क एवं लीवर का ***खोल*** भी बनता है ।
(iii) अंतः स्तर (Endoderm) – हृदय, मस्तिष्क एवं पाचन प्रणाली का निर्माण

- गर्भकाल के 6 माह के समय शिशु पूर्णतः बनने लगता है, जो बाहरी वातावरण से प्रभावित होता है।
- बालक शिशु की अपेक्षा बालिका शिशु का गर्भकाल अधिक लम्बा होता है।
- बच्चों की संवेदनाएं नाक से शुरू होती हैं ।
- गर्म चीज से तेजी से बच्चा गति करता है।
- गर्भावस्था का अधिकतम समय = 330 दिन
- न्यूनतम समय = 180 दिन
- गर्भकाल के 5 वें माह में शिशु में दांतों का निर्माण शुरू होता है।
- मांटेग्यू ने कहा, बच्चा जितनी सरलता से जन्म लेता वह उतनी जल्दी ही स्थिरता स्थापित करता है। वह अधिक सक्रियता व धीरता पूर्ण होता है।
- प्रोजिस्ट्रोन हार्मोन – गर्भ धारण करने में सहयोग करता है।
- ऑक्सीटॉसीन – जन्म होने से पूर्व सहयोग करता है ।
- रिलेक्सीन – जनन नाल को बड़ा करने में सहयोग करता है ।

2. ***शैशवावस्था*** (0 से 5 साल)–

- शैश्ववस्था अंग्रेजी भाषा के in fancy शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। यह शब्द लैटिन भाषा के Infast से बना है। जो In + Fast से तात्पर्य है नहीं बोलने की अवस्था कहा जाता है। इस समय में बालक ज्यादातर रोने का कार्य करता है। जो निरर्थक माना जाता है।
- शैश्ववस्था मानव विकास की आधारशिला एवं नीव तैयार होती है। इस काल को जीवन का आधार काल अथवा जीवन का आदर्श काल कहा जाता है।
- शैश्ववस्था के काल में बालक/बालिका में संचय की प्रवृत्ति पायी जाती है। जिस कारण इसे जीवन
- का संचयी काल कहा जाता है।

- इसका समय जन्म -5 / 6 वर्ष तक होता है । जिसमें किसी भी बालक का शारीरिक विकास अन्य विकास की अपेक्षा तीव्र होता है ।
- इस अवधि तक शिशु देखने, सुनने, चखने, गंध, आनंद, दर्द जैसे सभी कार्य करने में सक्षम हो जाते हैं अतः जन्म के समय शिशु अपनी अभिव्यक्ति केवल भावनाओं के रूप में व्यक्त करता है। इस अवस्था में वह अपनी इन्द्रियों का स्तेमाल करना सीखता है ।

कॉल – 0 से 2 वर्ष तक शैशवावस्था तथा 2 से 5 वर्ष प्रारंभिक बाल्यावस्था

शैले – 0 से 5 वर्ष तक शैशवावस्था होती है।20वीं सदी में बालकों को लेकर बहुत सारे अनुसन्धान करने के कारण क्रो एवं क्रो ने 20 वीं सदी को बालकों की सदी माना है।

उपनाम –

- जीन पियाजे के अनुसार, "शैशवावस्था अतार्किक चिंतन की अवस्था है। "
- सीखने का आदर्शकाल -वेलेंटाइन के अनुसार
- तीव्र विकास की अवस्था – वाटसन
- पराधीनता की अवस्था
- अपीलीकाल या खतरनाक काल की अवस्था
- खिलौने की अवस्था
- अनुकरण की अवस्था
- उदासीनता काल
- नैतिक शून्यता काल
- जीवन की आधारशिला - फ्रायड
- सजीव चिंतन की अवस्था

विशेषताएं –

(1) शारीरिक व मानसिक विकास की गति तेज होती है।

गुडएनफ, "बच्चे का प्रथम 3 $\frac{1}{2}$ साल में आधा (मानसिक) विकास हो जाता है।

(2) काल्पनिक जगत में निवास करना।
(3) दूसरों पर निर्भरता
(4) नार्सीसिज्म/ आत्मप्रेम की अवस्था
(5) दोहराने की प्रवृति
(6) सीखने की प्रवृति
(7) मूल प्रवृत्ति आधारित व्यवहार
(8) सहज क्रिया करना
(9) काम प्रवृत्ति (स्थनपान व अंगूठा चूसना)

शिक्षा देना -

(i) मातृ भाषा सीखाना
(ii) उचित वातावरण देना / व्यवहार – सीखाना
(iii) आत्मनिर्भरता
(iv) अच्छी आदतों का निर्माण
(v) वास्तविक वस्तुओं द्वारा ज्ञान
(vi) क्रिया / खेल विधि
(vii) चित्र व कहानियां सुनाना
(viii) जिज्ञासा को पूर्ण करना
(ix) मूल प्रवृत्ति की संतुष्टि

3. बाल्यावस्था (Childhood)

यह सामान्यतः 6 वर्ष से 11 वर्ष / 12 वर्ष तक मानी जाती है।

बाल्यावस्था के काल के प्रारम्भिक काल में अर्थात लगभग 9 वर्ष की अवस्था में पूर्व शैशवावस्था का शारीरिक विकास का प्रक्रम है। वह तीव्रता बनी रहती है। लेकिन उत्तरकालीन बाल्यावस्था में बालक तथा बालिका के विकास प्रक्रम में परिपक्वता आ जाती है । जिस कारण इस अवस्था को परिपाद काल कहते है।

बाल्यावस्था में बालक बालिका से आगे रहता है। लेकिन उत्तरकालीन समय तक बालिका का विकास बालक से आगे होता है।

विद्वानों द्वारा बाल्यावस्था की परिभाषा :-

फ्राइड- "बाल्यावस्था एक निर्माण काल होता है।

कॉल- ब्रश "बाल्यावस्था जीवन का अनोखाकाल होता है।

रॉस- "बाल्यावस्था को मिथ्या परिपक्वता का काल कहा है।

किलपेट्रिक- बाल्यावस्था एक प्रतिद्वन्द्वात्मक / समाजीकरण का काल होता है।

जीन पियाजे -"मूर्त परिचालन की अवस्था होती है।"

स्ट्रेंग – 10 वर्ष की अवस्था तक ऐसा कोई खेल नहीं होता जिसे बालक नहीं खेलता हो ।

अन्य मुख्य नाम -

- विद्यालय की आयु
- सारस की आयु
- उत्पति की अवस्था / निर्माणकारी अवस्था
- गंदी अवस्था (dirty age)
- टोली की आयु (gang age)
- खेल की आयु (game age)
- मंद परिवर्तन काल,
- अनोखा काल एवं निश्चिन्ता की अवस्था

विशेषताएं –

(i) बाल्यावस्था में शारीरिक व मानसिक विकास में स्थिरता आ जाती है।
(ii) वास्तविकता की अवस्था होती है।
(iii) बर्हिमुखी होते हैं ।
(iv) रचनात्मक की अवस्था
(v) संग्रह की अवस्था
(vi) काम क्रिया की प्रवृत्ति न्यूनतम
(vii) तार्किक / वैज्ञानिक रुचि
(viii) समलैंगिक / मित्रता व खेल
(ix) नेतृत्व गुण का प्रारंभ
(x) बाल्यावस्था में बालक झूठ बोलना, चोरी करना जैसे व्यवहार करता है।
(xi) निरुद्देश्य भ्रमण की अवस्था
(xii) इस अवस्था में अस्थायी चिन्ह गायब होकर स्थायी चिन्ह आने लगते है।

अध्याय -10

समायोजन की संकल्पना एवं तरीके

अर्थ :- शारीरिक व मानसिक संतुलन बनाए रखने की योग्यता समायोजन कहलाती है।

समायोजनशीलता - समायोजन की प्रक्रिया में एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के साथ जो संबंध स्थापित करता है वह अभिव्यक्त होता है।

- समायोजन शब्द का शाब्दिक अर्थ किसी व्यवस्था से अच्छी तरह घुल मिल जाना चाहिए।
- समायोजन में बालक किसी भी प्रकार की परिस्थितियों में अनुकूलन करते हुए अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर लेता है और उसमें कोई द्वन्द उत्पन्न नहीं होता है।
- वह समाज तथा परिवार के मापदंडों, तौर-तरीकों परंपराओं को सीखकर उनमें समायोजित हो जाता है।
- लेकिन जब बालक उन परंपराओं और मापदंडों को समझने वाला होता है तो हताश व निराश हो जाता है जिससे उसमें कुंठा उत्पन्न हो जाती है।
- समायोजन की प्रक्रिया में परिवार का वातावरण सबसे पहले कार्यशाला होती है।
- यह बालक आवश्यकता पूर्ति के लिए समाज के लिए बाधक नहीं होता।
- यह बालक स्पष्ट उद्देश्यो वाला तथा समस्या का समाधान करने वाला होता है।

परिभाषा :-

1. गेट्स व अन्य के अनुसार :- समायोजन निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने तथा वातावरण के मध्य संतुलन बनाए रखने के लिये व्यवहार में परिवर्तन करता है।
2. बोरिंग, लेगफिल्ड, वेल्ड के अनुसार :- समायोजन एक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा हम अपनी आवश्यकताओं तथा उनको प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में संतुलन बनाते हैं।
3. स्कीनर के अनुसार :- समायोजन एक अधिगम प्रक्रिया है।
4. एडलर के अनुसार :- समायोजन श्रेष्ठता प्राप्ति का आधार है।

समायोजित व्यक्तित्व की विशेषताएं :-

1. परिस्थितियों के अनुकूल आचरण।
2. उत्तम कार्यक्षमता।
3. सामाजिकता का गुण पाया जाता है।
4. स्वतंत्र निर्णय शक्ति
5. प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करने की योग्यता।
6. स्वयं के गुण और कमियों की समझ।

समायोजन को प्रभावित करने वाले कारक या कुसमायोजन की ओर ले जाने वाले कारक :-

1. **भग्नाशा / कुंठा :-**

गुण के अनुसार :- किसी इच्छा या आवश्यकता के मार्ग में उत्पन्न संवेगात्मक तनाव।

भग्नाशा के प्रकार -

i. **आंतरिक भग्नाशा :-** स्वयं की वजह से किसी आवश्यकता की पूर्ति न हो पाना।

ii. **बाह्य भग्नाशा :-** किसी बाहरी कारक की वजह से आवश्यकता की पूर्ति न हो पाना।

भग्नाशा के कारण :-

(1)भौतिक वातावरण :- जैसे - बाढ़, भूकम्प, सुनामी, वर्षा।
(2) सामाजिक वातावरण
(3)शारीरिक दोष
(4)निर्धनता
(5)विरोधी इच्छा तथा विरोधी उद्देश्य
(6)नैतिक आदर्श
(7)असंगत आवश्यकताएं
(8) मानसिक संघर्ष

भाग्नाशा की स्थिति में व्यवहार :-

(1) एकान्तवासी बन जाना।
(2) रोगग्रस्त होने की बात करना।
(3) आक्रमणकारी बन जाना।
(4) आत्मसमर्पण कर देना।

नोट :- भग्नाशा मापन करने वाले विद्वान- रोजनवीग

- रोजनवीग ने तस्वीर, कुंठा अध्ययन नामक परीक्षण का निर्माण किया जिसमें 24 चित्र होते हैं।

2. **तनाव :-**

गेट्स व अन्य के अनुसार :- तनाव असंतुलन की दशा है, जो व्यक्ति को उत्तेजित अवस्था का अन्त करने के लिए प्रेरित करती है।

3. **दुश्चिन्ता :-** चेतन तथा अचेतन के मध्य होने वाला संघर्ष।
4. **दबाव :-** प्रतियोगिता तथा आत्म सम्मान की वजह से दबाव महसूस होता है। दबाव के लिए बाह्यीय वातावरण जिम्मेदार होता है।
5. **द्वंद्व / संघर्ष :-** द्वंद्व का आधार है, उचित -अनुचित का विचार मन में आना।

द्वन्द के प्रकार -

1. **उपागम-उपागम** (Approach -Approach conflict)
जहाँ दोनों और समान परिस्थितियां हों (धनात्मक)
जैसे - एक छात्र एक साथ दो भर्ती परीक्षाओं में सफल हो गया अब उसके सामने दो विकल्प हैं की वो कौनसे पद का चयन करे।
2. **परिहार-परिहार** (Avoidance-Avoidance conflict)
जब दोनों परिस्थितियों से बचना चाहें (नकारात्मक)
जैसे - इधर गिरे तो कुआँ उधर गिरे तो खाई
3. **उपागम - परिहार** (Approach-Avoidance conflict)= दोनों परिस्थितियों में से एक का चुनाव करना (धनात्मक, ऋणात्मक)
जैसे - शादी के बाद बेटे द्वारा माता व पत्नी में से किसी एक का पक्ष लेना।

- मनो-सामाजिक विकास सिद्धान्त :- इरिक्सन
- भाषा विकास सिद्धान्त :- चोमस्की
- नैतिक विकास सिद्धान्त :- कोहलबर्ग
- विलियम जेम्स ने "प्रिंसिपल ऑफ साइकोलॉजी" पुस्तक लिखी थी।
- कलकता विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान का प्रथम विभाग 1916 ई में खोला गया।
- भारतीय मनोवैज्ञानिक एसोसिएशन की स्थापना 1924में हुई।
- 1941ई. को नेशनल अकेडमी ऑफ साइकोलॉजी इंडिया की स्थापना हुई।
- विलियम वुण्ट ने 1862 में बीट्रेन (Bitrate) नामक प्रारम्भिक पुस्तक में ही मनोविज्ञान को एक स्वतंत्र प्रयोगात्मक विज्ञान होने की घोषणा कर दी थी।
- बोरिंग ने विलियम वुण्ट के लिए कहा है कि "वुण्ट से पहले मनोविज्ञान तो बहुत था परन्तु कोई मनोविज्ञानी नहीं था।"
- एबिंगहास, "मनोविज्ञान का अतीत तो बहुत लम्बा है परन्तु इसका इतिहास बहुत कम दिनों का है।" मनोविज्ञान वर्तमान में शैशवावस्था में है।
- शताब्दियों पूर्व मनोविज्ञान को दर्शनशास्त्र की एक शाखा के रूप में माना जाता था।
- वाटसन को व्यवहारवादी मनोविज्ञान का जनक कहते है।
- विलियम वुण्ट ने जर्मनी के लिपजिंग स्थान पर 1879 में प्रथम मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला स्थापित की। इसलिए विलियम वुण्ट को प्रयोगात्मक मनोविज्ञान का जनक माना जाता है।
- 20वीं शताब्दी में मनोविज्ञान को व्यवहार का विज्ञान माना गया और आज तक ये ही परिभाषा प्रचलित है।
- शिक्षा मनोविज्ञान व्यक्ति के व्यवहारात्मक पक्ष का शैक्षणिक परिस्थितियों में अध्ययन करता है।
- किल पेट्रिक ने शिक्षा के क्षेत्र में प्रोजेक्ट प्रणाली को जन्म दिया तथा करके सीखने पर बल दिया।
- डॉ. मारिया मॉण्टेसरी ने मन्द बुद्धि बालकों के लिए शिक्षण कराने हेतु मान्टेसरी प्रणाली/विधि का प्रतिपादन किया।
- हरमन रोर्शा ने 1921 में स्याही धब्बा परीक्षण का निर्माण किया।
- आर्मस्ट्रॉग ने "ह्यूरिस्टिक पद्धति" का प्रतिपादन किया। यह विधि विज्ञान के लिए बहुत उपयोगी रही। बी.एफ.स्कीनर ने 1938 में क्रिया प्रसूत अनुबन्धन सिद्धान्त का प्रतिपादन किया।
- टॉलमैन ने 1932 में प्रयोजनमय (उद्देश्यवाद) व्यवहार का प्रतिपादन किया।
- त्योपोल्ड बैलोक ने 1948 में व्यक्तित्व मापन के लिए बाल-अन्तर्बोध परीक्षण का निर्माण किया।
- डॉ कार्लटन ने विनेटिका इकाई प्रणाली का प्रतिपादन किया।

लेखक	पुस्तक
विलयम जेम्स	मनोविज्ञान के सिद्धांत (प्रिंसिपल ऑफ साइकोलॉजी)
मैक्डुगल	आउट लाइन ऑफ साइकोलॉजी, सामाजिक मनोविज्ञान एक परिचय
वाट्सन	साइकोलॉजी एज ए बिहेवियरियट व्यूज इट, व्यवहारवाद
जॉन डीवी	स्कूल और समाज
हेनरी काल्डवेल कुक	प्ले वे
थार्नडाइक	शिक्षा मनोविज्ञान, एनिमल इन्टेलिजेन्स
सी.एल. हल	प्रिंसिपल ऑफ बिहेवियर
गिलफोर्ड	फिल्ड ऑफ साइकोलॉजी
स्प्रेन्गर	टाइप्स ऑफ मैन
क्रेचमर	फिजिक एण्ड करेक्टर
फ्रायड	इन्टरप्रेशन ऑफ ड्रीम (1902)
सी. डब्ल्यू	माइण्ड दट फाउण्ड इटशेल्फ
थस्टर्न	प्राथमिक मानसिक योग्यतायें
डेनियल गोलमैन	संवेगात्मक बुद्धि - बुद्ध लब्धि से अधिक महत्वपूर्ण क्यों ?
स्टेनले हॉल	एडोलेसेन्स
जिन पियाजे	बाल चिन्तन की भाषा
जॉन डीवी	हाउ वी थिंक
इरिक इरिक्सन	बचपन तथा समाज (चाइल्डहुड एण्ड सोसायटी)
गिलफोर्ड	जनरल साइकोलॉजी
जेरोम ब्रूनर	शिक्षा की प्रक्रिया
जिन पियाजे	संसार के बच्चों के विचार
प्रेयर	माइण्ड ऑफ चाइल्ड
अल्बर्ट बाण्डुरा	सोसियल फाउण्डेशन ऑफ थोट एण्ड एक्शन
स्टीफेन एन. कोरे	विद्यालय की कार्यपद्धति में सुधार करने की क्रियात्मक अनुसंधान
रुडोल्फ गोइकिल	साइकोलोजिया
एच. ए. रेबर्न	एन इंट्रोडक्सन टू साइकोलॉजी
कुर्ट लेविन	ए डाइनेमिक थ्योरी ऑफ पर्सनल्टी
बाण्डुरा एण्ड वाल्टर्स	सामाजिक विकास तथा व्यक्तित्व विकास
कुर्त कोफ्का	द ग्रोथ ऑफ माइण्ड
पोलेन्सकी	करेक्ट एण्ड पर्सनल्टी
आलपोर्ट	पैटर्न एण्ड ग्रोथ ऑफ पर्सनल्टी
हावर्ड गार्डनर इंटेलीजेन्स।	फ्रेम्स ऑफ माइण्ड - द थ्योरी ऑफ मल्टिप्लाई
स्कीनर	द बिहेवियर ऑफ द ऑर्गेनिज्म।
कुर्त लेविन	फिल्ड थ्योरी एण्ड लर्निंग।

किसी भी तरह से विंडो 8 को बदल कर विंडो 10 इस्तेमाल करें। और जो माइक्रोसॉफ्ट की गलती थी, जो विंडो 8 के साथ की गई थी वह ठीक हो जाए।

- तो इस तरह से माइक्रोसॉफ्ट ऑपरेटिंग सिस्टम विंडो का इतिहास रहा और आज के समय में हमारे सामने माइक्रोसॉफ्ट ने अपना सबसे बढ़िया और एडवांस ऑपरेटिंग सिस्टम विंडो 10 को लेकर आए।
- तो अब आपको पता चल गया होगा की विंडो का इतिहास कहां से शुरू हुआ और कैसे यह हम तक पहुंची और किस-किस तरह कि इसमें बदलाव किए गए तो आज हम आपको इस पोस्ट में माइक्रोसॉफ्ट ऑपरेटिंग सिस्टम विंडो के इतिहास के बारे में बताए और उसके बारे में सारी विस्तार से जानकारी दी।

अध्याय – 5

वर्ड प्रोसेसिंग सॉफ्टवेयर

माइक्रोसॉफ्ट वर्ड एक नया प्रोसेसिंग सॉफ्टवेयर है। इसे माइक्रोसॉफ्ट द्वारा डाक्यूमेंटस, रिपोर्ट्स, टेक्स्ट, चित्र तथा ग्राफिक्स के निर्माण हेतु बनाया गया है। यह सॉफ्टवेयर टेक्स्ट के फॉर्मेट, उत्पादन तथा उसके निर्माण के लिए उपकरण उपलब्ध कराता है। इन सॉफ्टवेयर में स्पेलिंग व ग्रामर की जांच करने, शब्दों को रेखांकित करने, ऑटोफॉर्मेट (Autoformat) करने जैसी कई सुविधाएं मौजूद हैं।

(a) विशेषताएं (Reatures)-

1. **फॉरमेटिंग (Formatting)** - टाइप किया हुआ टेक्स्ट किसी भी रूप एवं स्टाइल में बनाया जा सकता है।
2. **ग्राफिक्स (Graphics)** - यह डॉक्यूमेन्टस में चित्र के प्रयोग की सुविधा प्रदान करता है ताकि डॉक्यूमेन्टस ज्यादा उपयोगी बन सकें।
3. **तीव्रता** - इस सॉफ्टवेयर में टेक्स्ट तेजी से टाइप होता है क्योंकि इसमें यांत्रिक (Mechanical) वहन (Carriage) प्रक्रिया सर्व) नहीं रहती है।
4. **संपादकीय विशेषता** - इसमें किसी भी प्रकार का संशोधन (Correction) चाहे टेक्स्ट डालना या परिवर्तित करना हो या उसे डिलीट करना हो, आसानी से किया जा सकता है।
5. **स्थायी भंडारण** - इसमें डॉक्यमेन्ट जब तक चाहें तब तक संग्रहित किया जा सकता है और आवश्यकता पड़ने पर उसे पुनः प्राप्त किया जा सकता है।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

एम.एस. वर्ड चालू करना (To Start Microsoft Word)

M.S. Word प्रोग्राम को चलाने के दो तरीके हैं -

I. Start ® All Programmes ® MS Office ® MS Word

II. माउस प्वांइटर Taskbar पर मौजूद Start बटन पर लाकर क्लिक किया जाए, इससे स्क्रीन पर पुश – अप, मेन्यू दिखाई देगा , पुश अप मेन्यू में माउस प्वांइटर को Programmes विकल्प पर लाया जाए इससे एक और मेन्यू दिखायी देगा , इस मेन्यू में से MS Office या Office SP का चयन करने से एक अन्य मेन्यू दिखायी देगा जिसमें से MS Word का चयन कर उस पर क्लिक करने से MS Word खुल जाएगा।

यदि डेस्कटॉप पर माइक्रोसॉफ्ट वर्ड का आइकन बना हुआ है तो उस पर माउस प्वांइटर ले जाकर डबल क्लिक करने से MS Word खुल जाएगा।

एम.एस वर्ड की विंडो में निम्न टूलबार होते हैं :-

टाईटल बार : जब हम वर्ड को खोलते हैं तो स्क्रीनशॉट में सबसे ऊपर की पट्टी टाईटल बार / इन्फॉर्मेशन बार (Information Bar) कहलाती है। इसमें प्रोगाम का नाम और खोले गए दस्तावेज का नाम प्रदर्शित होता है।

मेन्यू बार : इसमें एम एस वर्ड के विभिन्न आदेशों के मेन्यूओं के नाम होने है वांछित मेन्यू को सिलेक्ट करने संबंधित मेन्यू नीचे की ओर खुल जाता है, जिसमें उक्त मेन्यू के सभी आदेश अथवा विकल्प खुल जाते हैं ।

स्टैण्डर्ड टूलबार: इसमें वर्ड विंडो में बारम्बार प्रयोग में आने वाले आदेशों के बटन (New, Open, Save स्पेलिंग और ग्रामर एवं प्रिंट) रहते हैं ।

Formatting Toolbar (फॉर्मेटिंग टूलबार) - इसके माध्यम से उपयोगकर्ता पाठ्य को फॉर्मेट कर सकने में सक्षम है । इसके अंतर्गत फॉन्ट नेम, फॉन्ट साइज, फॉन्ट स्टाइल, मार्जिन, पैराग्राफ, बुलेट्स और नम्बरिंग आदि बटन रहते हैं।

रूलर: इसमें दस्तावेज को निर्धारित आकार में लाए जाने हेतु विभिन्न हाशिए की व्यवस्था होती है यह क्षैतिज तथा उर्ध्वाधर दो प्रकार के होते हैं जिन्हें ऑपरेटर आवश्यकतानुसार परिवर्तित कर सकता है ।

पाठ्य क्षेत्र: इस स्थान में ही ऑपरेटर दस्तावेज टाइप तथा क्लिप आर्ट आदि लाकर पेस्ट करता है ।

कर्सर: इसे ध्यान बिन्दु भी कहा जाता है, तथा पाठ्य क्षेत्र में यह अंग्रेजी के आई अक्षर (I) के रूप में दिखाई देता है। यह Blinking Cursor कहलाता है । यह स्क्रीन पर उस जगह दिखाई देता है जहां कोई व्यक्ति की - बोर्ड से टाइप कर रहा होता है । इसके द्वारा ऑपरेटर पाठ्य क्षेत्र में क्रमशः दाएं, बाएं, ऊपर और नीचे कहीं भी जा सकता है ।

स्टेट्स बार: इस बार पर दस्तावेज से संबंधित कई अतिरिक्त सूचनाएं दी जाती है जैसे पृष्ठ संख्या, लाइन संख्या, पाठ्य क्षेत्र में कर्सर की स्थिति आदि ।

स्क्रॉल बार: दस्तावेज जो बड़े आकार के होते हैं तथा जिन्हें पाठ्य क्षेत्र में एक साथ देखा नहीं जा सकता है, उन्हें क्षैतिज तथा ऊर्ध्वाधर स्क्रालबार के माध्यम से देख तथा उसमें अपेक्षित सुधार कर सकते हैं ।

ऑफिस असिस्टेंट: इसके माध्यम से ऑपरेटर को उसके द्वारा किए जा रहे कार्यों से संबंधित उपयोगी टिप प्राप्त होता रहता है ।

Home Tab: - इसके अंतर्गत Text एवं Paragraph को सेट करने के विकल्प होते हैं। इनके अंतर्गत Clipboard, Font, Paragraph एवं Style सेट करने की सुविधाएं दी गई हैं ।

Page Layout: इसके अंतर्गत पेपर की साइज, पेज का मार्जिन आदि सेट कर सकते हैं ।

Mailing Section: - इसके अंतर्गत Letters, Envelops तथा Labels होते हैं । इनका प्रयोग करके डॉक्यूमेंट को एक से अधिक लोगों को एक साथ भेजा जा सकता है ।

Review Tab: इसके अंतर्गत डॉक्यूमेंट की स्पेलिंग व ग्रामर चेक कर सकते हैं ।

Documents प्रक्रिया: वर्ड को माइक्रोसॉफ्ट द्वारा डॉक्यूमेंटस तथा रिपोर्ट्स बनाने के लिये तैयार किया है। जब हम वर्ड को खोलते हैं तो स्क्रीनशॉट में सबसे ऊपर की पट्टी इन्फोर्मेशन बार (Information) कहलाती है । इसमें डॉक्यूमेन्ट के विषय में जानकारी होती है । उसके नीचे की पट्टी को मेन्यूबार (Menu Bar) कहते हैं। मेन्यूबार के नीचे की दो पट्टियां टूलबार (Tool Bar) कहलाती है जिसमें विभिन्न आइकॉन्स (Icons) बने होते हैं।

टूल बारों का प्रयोग: एम. एस. वर्ड में कुल 16 प्रकार के टूलबार होते हैं किन्तु इनमें से 10 या 12 ही विंडो पर दिखाई देते हैं, शेष अन्य को ऑपरेटर आवश्यकतानुसार ओपन कर उसका प्रयोग सुनिश्चित करता है ।

नए दस्तावेज को बनाना (Creating New Document):
वर्ड में नया डॉक्यूमेंट निम्न में से किसी एक तरीके से बनाया जा सकता है:

1. मेन्यू बार के फाइल मेन्यू पर क्लिक करें, स्क्रीन पर एक ड्राप-डाउन मेन्यू दिखायी देता है ।
2. स्टैण्डर्ड टूल बार में न्यू बटन को क्लिक करें, या
3. की - बोर्ड (Keyboard) में कन्ट्रोल + N (Control + N) दबायें ।

ऐसा करने पर MS Word की मुख्य विंडो की तरह एक खाली दस्तावेज मिलता है जिसमें प्रयोगकर्ता अपनी इच्छानुसार सामग्री का निर्माण कर सकता है।

MS Word में पुरानी फाइल खोलना (To open an old file): वर्ड में पहले से ही बने किसी डॉक्यूमेंट निम्नलिखित में से किसी एक तरीके से खोला जा सकता है ।

1. मेन्यू बार में फाइल मेन्यू में ओपन (Open) को क्लिक करें, या
2. स्टैण्डर्ड टूल बार में ओपन बटन को क्लिक करें, या
3. की - बोर्ड में कन्ट्रोल + O (Control + O) दबाँयें

जिसके बाद जिस फोल्डर में फाइल है उसका चयन किया जाता है और फिर प्राप्त फाइलों की सूची में से इच्छित फाइल का चयन कर विकल्प पर क्लिक किया जाता है । इस प्रकार नीचे दिये गये स्क्रीनशॉट वाला विंडो खुल जायेगा।

डॉक्यूमेन्ट को सुरक्षित (Save) करना - वर्ड में किसी डॉक्यूमेंट को निम्न में से किसी एक तरीके से सुरक्षित किया जा सकता है।

1. फाइल मेन्यू में सेव (Save) को क्लिक करें, या
2. स्टैण्डर्ड टूल बार में सेव बटन को क्लिक करें, या
3. की - बोर्ड में कन्ट्रोल + S (Control + S) दबायें। इससे एक Save as बॉक्स स्क्रीन पर दिखाता है । इस बॉक्स में File name विकल्प के साथ कुछ हाईलाइटेड शब्द दिखायी देते हैं । इस बॉक्स में अपने डॉक्यूमेन्ट का नाम Enter करना होता है ।

-Save as बॉक्स में Save पद विकल्प के साथ बने बॉक्स में My Documents फोल्डर का नाम लिखा दिखाई देता है।

Spelling and Grammar	F7	यह किसी सक्रिय दस्तावेज में व्याकरण तथा स्पेलिंग की जांच करने का कार्य तथा गलती (Error) को दूर करने हेतु सुझाव देने का कार्य करता है ।
Cut (Edit Menu)	Ctrl + X	किसी टेक्स्ट या चित्र को सक्रिय दस्तावेज (Documents) से हटाता है।
Copy (Edit Menu)	Ctrl + C	यह किसी टेक्स्ट या चित्र को Copy करने के लिए प्रयुक्त होता है ।
Paste (Edit Menu)	Ctrl + V	Copy किए गए सामग्री को इच्छित स्थान पर रखने (Paste करने) का कार्य करता है ।
Undu (Edit Menu)	Ctrl + Z	पूर्व में किए गए किसी कार्य या कमाण्ड को समाप्त करता है ।
Redu (Edit Menu)	Ctrl + Y	Undo की क्रिया को समाप्त करता है ।
Hyperlink	Ctrl + K	इसके द्वारा चयनित हाइपर लिंक को Edit किया जाता है, या नए हाइपरलिंग को डाला जाता है ।
Tables & Borders		यह टेबल्स तथा बॉर्डर टूलबार को दिखलाता है ।
Insert Tables		किसी टेबल को बनाया एवं प्रविष्ट किया जाता है ।
Insert Excel Worksheet		यह किसी डॉक्यूमेंट में स्प्रेडशीट को डालने अथवा जोडने का कार्य करता है ।
Office Assistant	F1	यह 'Help topics and tips' देता है, जिसके द्वारा कार्य को पूरा किया जाता है ।
Mail Recipient		दस्तावेज की अंतर्वस्तु (Content) को e-mail के रूप में भेजने का कार्य करता है ।
Zoom		यह किसी सक्रिय Document के Display को 10>> से 400>> तक बढ़ाने या घटाने का कार्य करता है।

कुछ अन्य टूल्स तथा की-बोर्ड शॉर्टकट –

टूल्स का नाम	कार्य/विवरण
Ctrl + A	पृष्ठ की सारी सामग्री का चयन करना ।
Ctrl + F	Find Box को खोलना ।
Ctrl + Shift + *	प्रिन्ट नहीं हुए कैरेक्टर को दिखाना या छुपाना ।
Outside Borders	यह किसी भी चुने हुए चीज के चारों ओर बॉर्डर बनाने या हटाने का कार्य करता है। यह फॉर्मेटिंग टूलबार का एक टूल है ।
Font Colour	यह फॉर्मेटिंग टूलबार का टूल है जो टेक्स्ट के फॉन्ट के रंग में परिवर्तन करता है ।
Ctrl + Mouse Wheel	यह किसी डॉक्यूमेंट के Zoom in और Zoom out का कार्य करता है ।

Shortcut Keys

- डॉक्यूमेंट को बनाना, खोलना, सेव करना, प्रिंट करना
- Ctrl + N नया खाली (New Blank) डॉक्यूमेंट बनाता है।
- Ctrl + S वर्तमान डॉक्यूमेंट Save हो जाता है ।
- Ctrl + W वर्तमान डॉक्यूमेंट Close हो जाता है परन्तु MS Word Close नहीं होता ।
- Alt + F4 MS Word या वर्तमान खुली हुई Application Close हो जाती है ।
- Ctrl + O 'Open' Dialog Box खुल जाता है । यहां जाकर हम किसी पुराने Save
- किए हुए डॉक्यूमेंट को खोल सकते हैं ।
- Ctrl + P 'Print Dialog Box खुल जाता है । यहां जाकर हम वर्तमान डॉक्यूमेंट का प्रिंट दे सकते हैं ।

कर्सर की स्थिति (Position) पर कुछ Insert करना

- Backspace - कर्सर के बायीं तरफ का एक अक्षर (Character) मिट जाता है ।

से रिकॉर्ड होते हैं । किसी भी सामान्य ब्लॉग में टेक्स्ट, इमेज्स व अन्य ब्लागों, वेब पेजों या किसी अन्य टॉपिक से संबंधित मीडिया के लिंक होते हैं, इनमें मुख्य रूप से टेक्सचुअल, कलात्मक चित्र, फोटोग्राफ, वीडियो, संगीत इत्यादि सम्मिलित हैं ।

(p) न्यूज ग्रुप्स (Newsgroups)

यह एक ऑनलाइन डिस्कशन ग्रुप होता है, जिसके अंतर्गत इलैक्ट्रॉनिक बुलेटिन बोर्ड सिस्टम तथा चैट सेसन्स के द्वारा बातचीत करने की अनुमति प्रदान की जाती है। यह न्यूज ग्रुप्स विषयों को उनके पदक्रम में संगठित करने के काम में आता है । जिसमें न्यूज ग्रूप का पहला अक्षर प्रमुख विषय की श्रेणी को व उपश्रेणियाँ उपविषय द्वारा दर्शायी जाती है ।

(q) सर्च इंजन (Search Engine)

सर्च इंजन इंटरनेट पर किसी भी विषय के बारे में संबंधित जानकारियों के लिए प्रयोग होता है । यह एक प्रकार की ऐसी वेबसाइट होती है, जिसके सर्च बार में किसी भी टॉपिक को लिखते हैं, जिसके बाद उससे संबंधित सभी जानकारियाँ प्रदर्शित हो जाती हैं । इनमें से कुछ निम्नलिखित हैं google
- http://www.google.comyahoo
- http://www.yahoo.com इत्यादि।

इंटरनेट सेवाएँ (Internet Services)

इंटरनेट से उपयोगकर्ता कई प्रकार की सेवाओं का लाभ उठा सकता है, जैसे - कि इलेक्ट्रॉनिक मेल, मल्टीमीडिया डिस्प्ले, शॉपिंग, रियल टाइम ब्रॉडकास्टिंग इत्यादि। इनमें में कुछ महत्त्वपूर्ण सेवाएँ इस प्रकार हैं -

(a) चैटिंग (Chatting)

यह वृहत स्तर पर भी उपयोग होने वाली टेक्स्ट आधारित संचारण है, जिससे इंटरनेट पर आपस में बातचीत कर सकते हैं । इसके माध्यम से उपयोगकर्ता चित्र, वीडियो, ऑडियो इत्यादिभी एक-दूसरे के साथ शेयर कर सकते हैं । उदाहरण- Skype, yahoo, messenger इत्यादि ।

(b) ई-मेल (Electronic-mail)

ई-मेल के माध्यम से कोई भी उपयोगकर्ता किसी भी अन्य व्यक्ति को इलेक्ट्रॉनिक रूप में सन्देश भेज सकता है तथा प्राप्त भी कर सकता है। ई-मेल को भेजने के लिए किसी भी उपयोगकर्ता का ई-मेल ऐड्रेस होना बहुत आवश्यक है, जो कि विश्वभर में उस ई-मेल सर्विस पर अद्वितीय होता है। ई-मेल में SMTP (Simple Mail Transfer Protocol) का भी इस्तेमाल किया जाता है । इसके अंतर्गत वेब सर्वर पर कुछ मैमोरी स्थान प्रदान कर दिया जाता है, जिसमें सभी प्रकार के मेल संग्रहीत होते हैं । ई-मेल सेवा का उपयोग उपयोगकर्ता विश्वभर में कहीं से भी कभी भी कर सकता है। उपयोगकर्ता ई-मेल वेबसाइट पर उपयोगकर्ता नेम (जो कि सामान्यतः उसका ई-मेल एड्रेस होता है) व पासवर्ड की सहायता से लॉगइन कर सकता है और अपनी प्रोफाइल को मैनेज कर सकता है । ई-मेल एड्रेस में दो भाग होते हैं जो एक प्रतीक @ द्वारा अलग होते हैं-पहला भाग यूजरनेम तथा दूसरा भाग डोमेन नेम होता है । उदाहरण के लिए, xeeedbooks@gmail.com। यहाँ पर xeeedbooks यूजरनेम तथा gmail.com डोमेननेम है ।

(c) वीडियो कॉन्फ्रेन्सिंग (Video Conferencing)

वीडियो कॉन्फ्रेन्सिंग के माध्यम से कोई व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह किसी अन्य व्यक्ति या समूह के साथ दूर होते हुए भी आमने-सामने रहकर वार्तालाप कर सकते हैं । इस कम्युनिकेशन में उच्च गति इंटरनेट कनेक्शन की आवश्यकता होती है व इसके साथ एक कैमरे, एक माइक्रोफोन, एक वीडियो स्क्रीन तथा एक साउण्ड सिस्टम की भी जरूरत होती है।

(d) ई-लर्निंग (E-learning)

इसके अंतर्गत कम्प्यूटर आधारित प्रशिक्षण, इंटरनेट आधारित प्रशिक्षण, ऑनलाइन शिक्षा इत्यादि सम्मिलित हैं जिसमें उपयोगकर्ता को किसी विषय पर आधारित जानकारी को इलेक्ट्रॉनिक रूप में प्रदान किया जाता है । इस जानकारी को वह किसी भी आउटपुट माध्यम पर देखकर स्वयं को प्रशिक्षित कर सकता है । यह कम्प्यूटर या इंटरनेट से ज्ञान को प्राप्त करने का एक माध्यम है।

(e) ई-बैंकिंग (E-banking)

इसके माध्यम से उपयोगकर्ता विश्वभर में कहीं से भी अपने बैंक अकाउण्ट को मैनेज कर सकता है। यह एक स्वचालित प्रणाली का अच्छा उदाहरण है, जिसमें उपयोगकर्ता की गतिविधियों (पूँजी निकालने, ट्रांसफर करने, मोबाइल रिचार्ज करने इत्यादि) के साथ उसका बैंक अकाउण्ट भी मैनेज होता रहता है । ई-बैंकिंग से किसी भी इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस (पीसी, मोबाइल आदि) इत्यादि पर इंटरनेट की सहायता की जा सकती है । इसके मुख्य व व्यावहारिक उदाहरण हैं - बिल पेमेंट सेवा, फण्ड ट्रांसफर, रेलवे रिजर्वेशन, शॉपिंग इत्यादि ।

(f) ई-शॉपिंग (E-shopping)

इसे ऑनलाइन शॉपिंग भी कहते हैं । जिसके माध्यम से उपयोगकर्ता कोई भी सामान; जैसे- किताबें, कपड़े, घरेलू सामान, खिलौने, हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर तथा हेल्थ इन्श्योरेन्स इत्यादि को खरीद सकता है। इसमें खरीदे गए सामान की कीमत चुकाने के लिए कैश ऑन डिलीवरी व ई-बैंकिंग (कम्प्यूटर पर ही वेबसाइट से भुगतान) का प्रयोग करते हैं। यह भी विश्वभर में कहीं से भी की जा सकती है ।

(g) ई-रिजर्वेशन (E-reservation)

यह किसी भी वेबसाइट पर किसी भी वस्तु या सेवा के लिए स्वयं को या किसी अन्य व्यक्ति को आरक्षित करने के लिए

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - ⬇ (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न , 150 में से)

UP Police Constable 2024 - http://surl.li/rbfyn (98 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6URO

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
MPPSC Prelims 2023	17 दिसम्बर	63 प्रश्न (100 में से)
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये

whatsapp - https://wa.link/r46kn5 1 web.- https://shorturl.at/gilw7

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)
UP Police Constable	17 February 2024 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

Our Selected Students

Approx. 483+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
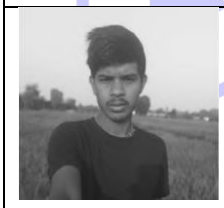	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
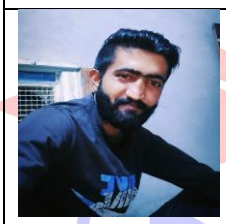	**Govinda Jangir**	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
	Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel	Rac batalian	729141135	Dis.- Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota
	Sanjay	Haryana PCS	96379	Jind (Haryana)

And many others.....

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

WhatsApp करें - https://wa.link/r46kn5

Online Order करें - https://shorturl.at/gilw7

Call करें - 9887809083

FREE SAMPLE